उपसंहार

उपसंहार

''ओमप्रकाश वाल्मीकि के 'बस्स! बहुत हो चुका'काव्यसंग्रह में चित्रित दलित चेतना'' के अध्ययन के उपरान्त समन्वित निष्कर्ष के रुप में जो तथ्य सामने आए हैं वे इस प्रकार हैं -

ओमप्रकाश वल्मीकिजी के जीवन परिचय एवं साहित्य के विश्लेषण के उपरान्त पता चलता है कि उनका व्यक्तित्व जिज्ञासू, कलाप्रेमी, स्वाभिमानी, साहसी यथार्थ के हिमायती और समाज सुधार की भावना से ओत प्रोत है। ओमप्रकाश वाल्मीकिजी स्वयं दलित होने के कारण उन्होंने दलित जीवन का अनुभव किया है। परिणामत: उनका साहित्य भी दलित जीवन से संबंधित घटनाओं का चित्रण करता है। वाल्मीकिजी का साहित्य दलितों में प्रेरणा जगाने का कार्य करता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी का जन्म ३० जून, १९५० को बरला, जनपद मुजफ्फर नगर (उत्तर प्रदेश) में हुआ। वाल्मीकिजी को गरीबी का सामना बचपन से ही करना पडा। उनके परिवार के सभी सदस्य त्यागी के घर जाकर साफ-सफाई से लेकर खेती-बाडी, मेहनत-मजदूरी और रात-बेरात बेगारी करके परिवार की जीविका चलाया करते थे। वाल्मीकिजी की माँ का नाम मुकुंदी था परंतु 'खजुरी' गांव की होने के कारण सब उन्हें 'खजूरीवाली' नाम से पुकारते थे।

वाल्मीकि जी ने बहुत परिश्रम के साथ शिक्षा ग्रहण की। दलित होने के कारण उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पडा। वाल्मीकिजी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव बरला में ही ली। वाल्मीकिजी को शिक्षकों द्‌वारा नैतिक आदर्शों की अपेक्षा जातीय हीनता से प्राताडित, जाति सुचक गाली गलौज ही सहना पडा। बरला कॉलेज के बाद डी.ए.वी. कॉलेज देहराडून में पढाई पूरी की। वाल्मीकिजी ने अपनी उच्च शिक्षा एम.ए.(हिंदी) गढ़वाल विश्वविद्यालय (श्रीनगर) से की फिर तकनीकी शिक्षा जबलपुर एवं मुम्बई में प्राप्त की।

वाल्मीकिजी के व्यक्तित्व को देखने के पाश्चात पता चलता है कि उन पर गौतम बुध्द, संत कबीर, संत रैदास, महात्मा ज्योतिबा फुले और डॉ. बाबासाहब अंबेडकर आदि महापुरुषों के विचारों का प्रभाव है। वाल्मीकिजी अपने जीवन में शिक्षा, समता और स्वातंत्र्य को महत्वपूर्ण

स्थान देते हैं। वे मानते हैं कि संघर्ष और आपदाएँ हमे मजबूती प्रदान करती हैं। वे निष्ठा और ईमानदारी को जीवन में महत्वपूर्ण मानते हैं। साथ ही वे दलित साहित्य के प्रति संवेदनाशील रहे वे समाज में समता, मानवता के पक्षधर रहे। समाज व्यवस्था में जो परंपरागत विचार हैं उन विचारों के प्रति वाल्मीकिजी के मन में विरोध दिखाई देता है।

वाल्मीकिजी के कृतित्व को देखने के पश्चात पता चलता है कि वे दलितों में चेतना उत्पन्न करना चाहते हैं तथा दलित वर्ग को समाज विकास के मुख्य प्रवाह से जोडना चाहते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकिजी बचपन से लेकर जवानी तक मिले जख्मों को सहते आये, उन्हें बचपन से संग लेकर चले, जख्मों का हिसाब किताब रखते हुए 'जूठन' आत्मकथा की रचना की। इस आत्मकथा को पढ़ते समय मन और मस्तिष्क उत्तेजित होने लगता है।

वाल्मीकि जी के सलाम, घुसपैठिये ये दो कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। इन कहानियों में दलितों की व्यथा है। इसमें दलित जीवन के लिए प्रतिबद्ध, मार्मिक और संवेदनशील कहानियाँ हैं। इन कहानियों में व्यवस्था के प्रति गहरा आक्रोश, व्यथा, विचार, दलितों का संघर्ष दृष्टिगोचर होता है।

वाल्मीकिजी के तीन कवितासंग्रह प्रकाशित हुए हैं - 'सदियों का संताप', 'बस्स! बहुत हो चुका' और 'अब और नहीं'। इन कविताओं में दलित जीवन के कुछ पहलू समस्याएँ एवं परम्पराएँ प्रस्तुत हैं। दलितों के शोषण की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। आक्रोश के साथ गंभीर अभिव्यक्ति में जहाँ अतीत के गहरे दंश हैं, वहीं वर्तमान की विषमतापूर्ण, मोहभंग कर देनेवाली स्थितियों को इन कविताओं में गहनता और सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है। साथ ही दलित कविता के मानवीय पक्ष को प्रभावशाली ढंग से उभारा है। ऐतिहासिक संदर्भों को वर्तमान से जोडकर मिथकों को नए अर्थों में प्रस्तुत किया है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि ओमप्रकाश वाल्मीकिजी के जीवन का, उनके विचार तथा आचारों का उनके साहित्य सृजन में प्रतिबिंब दृष्टिगोचर होता है। उनका व्यक्तित्व तथा कृतित्व युवा पीढी के लिए प्रेरणादायी है। अत: वाल्मीकिजी एक समाजाभिमुख, चिंतनशील, जागृत

साहित्यकार हिंदी दलित साहित्य के एक सशक्त हस्ताक्षर तथा बहुमुखी प्रतिभा संपन्न रचनाकार के रुप में परिचित हैं।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में दलित साहित्य का स्वरुप एवं विवेचन स्पष्ट हुआ है। जिसमें यह बात स्पष्ट हुई है कि दलित साहित्य किसे कहेंगे? इस सवाल पर बहस होती रही है कि लोग इसका सिद्धान्त तय करना चाहते हैं। दलित साहित्य की कोई सैध्दांतिक परिभाषा नहीं बन सकती। इसे ऐतिहासिक दृष्टि से देखना चाहिए। दलित शब्द का अर्थ जिसका दलन हुआ है, शोषण यह है। भारतीय समाज व्यवस्था के अंतर्गत जिन्हें अस्पृश्य माना गया हैं वे सभी दलित है। दलित समाज के अंतर्गत अस्पृश्य, हरीजन, डिस्प्रेस्ड क्लासेस आदि आते हैं। समाज में दलित वर्ग का उच्चवर्णियों द्वारा शोषण किया जाता है। समाज में दलित आज भी अपने अधिकारों से वंचित दिखाई देते हैं। भारत में प्राचीन काल से वर्णव्यवस्था पद्धति चली आ रही है। इस वर्णव्यवस्था के कारण दलित समाज की स्थिति भयावह नजर आती है। समाज में शूद्रों के साथ आज भी घृणास्पद व्यवहार किया जाता है। इसी कारण उनका विकास नहीं हो पाया है। दलितों का आज भी शाररिक तथा मानसिक शोषण करने में महाजन, पूँजिपति, सेठ, मुंशी तथा भ्रष्ट अफसर आदि प्रमुख है।

दलित शब्द के अर्थ के साथ इसकी व्यापकता तथा उसके आशय को स्पष्ट करने का प्रयास किया है दलित शब्द समाज में हिंदू जाति व्यवस्था एवं समूह का द्योतक है। दलित शब्द जातिभेद निर्मूलन की ओर न ले जाकर हिंदू समाज व्यवस्था को जाति व्यवस्था की ओर ले जाता है। दलित समाज की सामाजिक स्थिति उच्चवर्ग द्वारा शोषित, अपमानित, उपेक्षित तथा पीड़ित परिलक्षित होती है।

भारतीय समाज व्यवस्था में दलितों का स्थान उपेक्षित है। देश की एकता, अखंडता के लिए जातिव्यवस्था, वर्णव्यवस्था, भाषावाद आड आते हैं। दलित साहित्य समता स्थापित करता है। डॉ. बाबासाहब अंबेडकरजी के प्रयत्नों से संवैधानिक अधिकारों के कारण दलित जीवन में सुधार आ रहा है। वर्तमान काल में दलित संगठित होकर आवाज उठा रहे हैं। डॉ. अंबेडकरजी ने दलितों में

BARR. B. LASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

शिक्षा का महत्व बताकर उन्हें जगाने का कार्य किया । उन्हें संघर्ष करने के लिए जागृत किया आजादी के पूर्व और आजादी के पश्चात दलितों की स्थिति में काफी मात्रा में परिवर्तन एवं विकास नजर आ रहा है । दलित समाज को विकास की चरमोत्कर्ष तक पहूँचना है तो दलितों में चेतन जागना महत्वपूर्ण है । दलित शिक्षा हासिल करके सरकारी नौकरियों में उच्च पद पर विराजमान हो रहे हैं । दलितों में नये मानवीय मूल्यों के तत्वों की स्थापना हुई है । समाज व्यवस्था में अमूलाग्र परिवर्तन हो रहे हैं, सवर्ण लोगों द्वारा होनेवाले अत्याचार को रोकने के लिए दलितों को राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागृत करने का काम डॉ बाबसाहब अंबेडकरजी ने किया है । डॉ बाबासाहब अंबेडकरजी ने भारतीय संविधान के जरिए दलितों को राजनीतिक हक दिए । दलित राजनीतिक सलाह के बिना अपना विकास नहीं कर सकते इसलिए उन्होंने दलितों को राजनैतिक अधिकारों के प्रति सजग करने का कार्य किया ।

दलित साहित्य की विशेषताओं की चर्चा करते हुए उनपर लगे आरोंपों का खंडन किया गया है । वस्तुत: दलित साहित्य मनोरंजन या आनंद उठाने का साहित्य नहीं है । ये प्रतिबध्द, अनुबध्द, कटिबध्द, परिवर्तनगामी प्रवृत्तियों से भरा साहित्य है जो अतीत से नहीं वर्तमान से सीखता है और भविष्य को बनाने में विश्वास रखता है । दलितों को धर्म और उसके अंधविश्वासों से बचाने का प्रयास करता है साथ ही नये समाज का निर्माण करने के लिए नई विचारधारा का स्वीकार करता है । दलित साहित्यकारों ने रुढी एवं परम्पराओं को तोडकर दलितों की पीडा, वेदना एवं यातनाओं को वाणी प्रदान की इसलिए इनका सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक परिवर्तन हुआ है । दलित समाज में क्रांति एवं चेतना लाने का कार्य दलित साहित्यकांरो ने किया है ।

धर्म के नाम पर ही दलितों का शोषण होता है । डॉ बाबासाहब अंबेडकरजी दलितों के हीन स्थिति का प्रमुख कारण धर्म ही मानते हैं । दलित वर्ग को हिंदू धर्म में कोई स्थान नहीं है । दलित वर्ग को समाज में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने के लिए तथा मूलभूत अधिकारों को प्राप्त करने के लिए डॉ बाबासाहब अंबेडकरजी ने धर्मांतर आवश्यक माना ।

हिंदी कविता में दलित जीवन का चित्रण करने का कार्य रैदास, कबीर तथा हिराडोम से शुरु हुआ । हिंदी दलित कविता ने जातिव्यवस्था, वर्ण व्यवस्था आदि को तोडकर दलितों की पीडा, वेदना, यातनाओं को वाणी प्रदान की । दलित साहित्यकारों एवं कवियों ने सामाजिक, आर्थिक राजनितिक एवं सास्कृंतिक परिवर्तन की दिशा में विशेष योगदान दिया । दलित समाज में क्रांति एवं चेतना उत्पन्न करने का कार्य दलित साहित्यकारों ने किया । दलितों के विभिन्न स्थितियों और समस्याओं का यथार्थ चित्रण दलित साहित्य में मिलता है । दलित साहित्य दलितों की प्रेरणा एवं विकास का महत्वपूर्ण केंद्रबिंदू है ।

प्रस्तुत काव्य-संग्रह की अधिकांश कविताएँ दलित समाज की यथार्थ स्थिति को दिखाती हैं । वाल्मीकिजी ने दलित जीवन का चित्रण अत्यंत सूक्ष्मता के साथ किया है, दलितों में चेतना उत्पन्न करने का सफल प्रयास किया है । वाल्मीकिजी ने हर कविता के माध्यम से दलित जनता की यातनाओं को प्रकट किया है । दलित जनता किन समस्याओं से जूझ रही है इसका सूक्ष्म चित्रण स्पष्ट किया है । ओमप्रकाश वाल्मीकिजी खुद दलित होने के कारण उन्होंने इन परिस्थितियों का सामना किया है इसलिए उनकी कविताओं में स्वानुभूति की सफल अभिव्यक्ति हुई है । कवि ने दलितों की यथार्थ स्थिति को अभिव्यक्त किया है, साथ ही दलितों में स्वाभिमान जगाया है । इनकी कविताओं में समय की सही पहचान दिखाई देती है । कवि ने सिर्फ दलितों को चित्रित नहीं किया बल्कि किसान और मजदूर की यातनाओं को तथा पीड़ाओं को प्रस्तुत किया है साथ ही इन सबके सामाजिक, आर्थिक शैक्षिक विकास की कामना की है । कवि ने प्रस्तुत कविताओं के माध्यम से कल के सुंदर भविष्य की आशा की है । प्रस्तुत कविताओं के माध्यम से कवि समतावादी समाज की स्थापना के लिए सामाजिक परिवर्तन को आवश्यक मानते हैं । इसी परिवर्तन की गूँज को उन्होंने प्रस्तुत कविताओं में अभिव्यक्त किया है ।

'बस्स! बहुत हो चुका' कविता संग्रह की कविताएँ समस्त तेज और जिजीविषा से पाठक को सराबोर कर डालती हैं । इसलिए इनकी रचनाएँ आश्चर्य का भाव नहीं व्यक्त करती बल्कि सरल, सहज एवं सूक्ष्म भाव से मन को कुरेदती, दिल और दिमाग को झँझोडती उन स्थितियों, उन

घटनाओं पर सोचने के लिए बाध्य कर देती हैं जो इन रचनाओं में वर्णित हैं। इन रचनाओं वे माध्यम से पाठक को लेखक के अनुभवों तक ले जाती है, जो किसी इकाई तक सीमित नहीं हैं घटनाएँ उनके लिए उतनी महत्वपूर्ण नहीं जितना कि परिवेश, जिसकी वे उपज हैं।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताएँ मूलत: पूर्व निर्धारित संस्कृति के प्रति, रुढीगत परम्पराअ के प्रति हैं। वाल्मीकिजी की कविताओं का मूल स्वर आक्रोश का है। इन कविताओं में जो आग है वह बेवजह नहीं उनमें अनुभव की चिंगारी है। वाल्मीकिजी की कविताएँ एक ऐसे आत्म की तलाश के लिए संघर्षरत हैं जो मनुष्य को मनुष्य का दर्जा दे पाने में असमर्थ हैं। इनकी कविताओं मे आक्रोश का तीखा स्वर है। इसी आक्रोश के साथ वे संघर्ष करते हुए परिवर्तन की रुपरेखा भी स्पष्ट करते हैं और कवि दलितों में आशावादी स्वर मुखरित करते हैं और उम्मीद करते हैं कि आनेवाले दिनों में समाज को वर्ण आधारित वर्गों में न बाँटकर वर्णरहित समाज की रचना हो जाए।

विवेच्य कविता संग्रह में चित्रित दलित चेतना पर चिंतन करते हुए वाल्मीकिजी ने दलित चेतना की आवश्यकता पर बल दिया है। वाल्मीकिजी का रचना संसार दलित समाज का दर्पण ही नहीं बल्कि सामाजिक जागृति तथा दलितों में वैचारिक क्रांति का द्योतक बना है। उन्होंने पीडित शोषित दलित मानव में अच्छे वैचारिक परिवर्तन को रेखांकित किया है। प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में गुलामी के प्रति विद्रोह, परंपरागत रुढीयों, अंधविश्वासों एवं पाखंडी प्रवृत्ति का विरोध, जाति व्यवस्था के प्रति विरोध, दलितों के शैक्षिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति का चित्रण आदि चेतनाओं पर मौलिक चिंतन प्रस्तुत किया है।

ओमप्रकाश वाल्मीकिजी की समसामयिक यथार्थ चेतना पर लिखी गई कई कविताओं से उनकी वैचारिक प्रतिबध्दता एवं उनपर हुआ बुध्द के दर्शन का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। दलितों की विषम परिस्थिति को ही व्यक्त करना इनका लक्ष्य नहीं बल्कि उनके भीतर सुलगता आक्रोश धीरे-धीरे दहकते विरोध में बदलता दिखाई देता है। अन्याय का जबाब यदि विद्रोह से देने के लिए एकाध समाज या व्यक्ति तत्पर होता है तब उसके विकास के सारे रास्ते खुल जाते हैं। भारत में दलित समाज की यही हालत थी। जो अधिकार दलितों को दिए हैं वे उन्हें आज तक प्राप्त

नहीं हो पाए हैं। दलितों को समाज विकास धारा से अछूत रखते हैं, राजनीति से दूर रखते हैं, दलितों पर अधिकार जताना अपना अधिकार मानते हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि स्वयं दलित होने के कारण उन्होंने दलित जीवन का अनुभव किया है परिणामत: उनकी कविताएँ भी दलित जीवन से संबंधित घटनाओं का चित्रण करती हैं। वाल्मीकिजी अपनी कविताओं के माध्यम से दलितों में प्रेरणा जगाने का कार्य करते हैं। वे अपनी कविताओं में शिक्षा, समता और स्वातंत्र्य को महत्वपूर्ण स्थान देते हैं और समाज में परंपरागत विचारों के बदलने की कामना करते हैं। वाल्मीकिजी दलितों में चेतना उत्पन्न करना चाहते हैं तथा दलित वर्ग को प्रगति के मुख्य प्रवाह से जोडना चाहते हैं। कवि ने प्रचलित रुढ़ि परम्पराओं पर तीखा प्रहार किया है। धर्म एवं जाति-पाँति के भेदभाव एवं कुरीतियों पर मर्मभेदी प्रहार किए हैं। कवि ने दलितों को जीने के लिए संघर्ष करने का संदेश दिया है।

'बस्स! बहुत हो चुका' काव्यसंग्रह में भाषा सौंदर्य शिल्प की सहज ही अभिव्यक्ति हुई है। वाल्मीकिजी की भाषा विवेच्य कविता संग्रह में स्थिति, काल एवं विषयों एवं भावों के अनुरुप दृष्टिगोचर होती है। भाषा में भाव या विचारों की अभिव्यक्ति मूलत: शब्द से ही होती है। इसी तथ्य के अनुसार ओमप्रकाश वाल्मीकिजी के भाषा समृद्धि का आधार अनेक विपुल शब्द भंडार से होता है। दलित कवियों ने परंपरावादी काव्य भाषा, काव्य प्रतीक, काव्य-बिम्ब का प्रयोग न कर नये प्रतीक आक्रामक एवं विद्रोहात्मक भाषा एवं शोषण से ओत-प्रोत बिंम्बो का प्रयोग किया है। उन्होंने भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित बृह्द दलित समाज वर्ग की व्यथा, कथा, पीडा, वेदना को वाणी देने के लिए जनमानस की भाषा को अपनाकर मन की बात, विचार तथा हृदय की भावनाओं को यथार्थ रुप में अभिव्यक्त किया है। हिंदी साहित्यकारों ने दलित कविताओं की कलात्मकता पर आक्षेप किया है। उनका कहना है कि दलित साहित्य में सौंदर्य नहीं है जब कि दलित साहित्य ने अपने शोषण और दमन से उपजे एवं आक्रोशित भाषा प्रतीक एवं बिम्बों को नये रुप में गढा है।

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत वाल्मीकिजी की भाषा का विश्लेषण, शब्द शक्ति, मुहावरे एव लोकोक्तियों, प्रतीकों और बिम्बों द्वारा दर्शाने का प्रयास किया है। प्रस्तुत काव्य-संग्रह में चित्रित बिम्ब परंपरावादी नहीं हैं बल्कि दलितों ने जो शोषण, अन्याय एवं अत्याचार को सहा है उसी को वाल्मीकिजी ने अपने शिल्प, भाषा, प्रतीकों, बिम्ब मुहावरे एवं लोकोक्तियों द्वारा स्पष्ट करने का सफल प्रयास किया है।

वाल्मीकिजी के विवेच्य कविता संग्रह में शिल्प में विद्रोह का स्वर अधिक मुखरित हुआ है शिल्प में विद्रोही स्वर से मतलब उस साहित्यिक क्षमता से है जो गुलाम को गुलाम होने का एहसास कराती है। अछूत को आजादी मिलने के बाद भी अछूत बने रहने की त्रासदी से व्याकूल कर देती है और प्रतिशोध की भाव से दासता की जंजीरों को तोडने का प्रयास करती है। वाल्मीकिजी के रचनाओं में सभी गुण मौजूद हैं जो दलितों को विद्रोह करने की प्रेरणा देते हैं। वाल्मीकिजी का शिल्प सौंदर्य मानो मानव को समर्पित मानव-अभिव्यक्ति है जिसके शब्द-शब्द में मेहनत और मुसीबतों से भरा जीवन संघर्ष और संघर्ष बोलता है।

वाल्मीकिजी के विवेच्य कविता संग्रह में निहित भाषा का रुप सरल सहज तथा उद्देश्यगत पहलूओं के तथ्यों से समन्वित है। उनकी भाषा समाज में व्याप्त पक्षपाती व्यवहार, शोषण दमन एवं अत्याचार के नग्न और भयावह सच्चाइयों को चित्रित करती है। वाल्मीकिजी की भाषा शोषण के खिलाफ विद्रोह ही नहीं बल्कि प्रतिशोध की भावना को स्पष्ट कर देने के लिए उपयुक्त है। इनकी रचनाएँ भोगे, सहे, जीये, देखे यथार्थ की जीवंत अभिव्यक्ति है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि 'बस्स! बहुत हो चुका' काव्य-संग्रह के रचयिता ही नहीं, सृष्टा ही नहीं, भोक्ता भी हैं। इनकी सभी रचनाएँ अविस्मरणीय कृतियाँ हैं और यही कारण है कि वाल्मीकिजी का हिंदी दलित साहित्य जगत् मे एक विशिष्ट स्थान है।

उपलाब्धियाँ —

उपर्युक्त विषय का अध्ययन करने के पश्चात जो उपलब्धियाँ प्राप्त हुई है, वे इस प्रकार है —

१. ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने दलित जीवन का यथार्थ वर्णन करके दलितों में आत्मभान एवं आत्मसम्मान जगाने का प्रयास किया है ।

२. ओमप्रकाश वाल्मीकिजी ने स्वानुभूति के आधार पर दलितों की पीडा एवं वेदना को वाणी दी है ।

३. ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने कविताओं के माध्यम से दलितों की समस्याओं को वाणी दी है ।

४. ओमप्रकाश वाल्मीकि साहितय के माध्यम से वैचारिक क्रांति लाना चाहते है ।

५. ओमप्रकाश वाल्मीकिजी की कविताएँ मानो भारतीय वर्णव्यवस्था के खिलाफ करारा प्रहार किया है जो पाठकों को सजग करती है ।

६. ओमप्रकाश वाल्मीकिजी की कविताएँ दलितों की स्थिति पर विचार करने के लिए पाठकों को प्रवृत्त करती है ।

अनुसंधान की नई दिशाएँ –

ओमप्रकाश वाल्मीकि के कविताओं पर निम्नांकित विषयों को लेकर स्वतंत्र रुप से अनुसंधान किया जा सकता है ।

१. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में मानवीय संवेदना ।

२. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में दलित विमर्श ।

३. ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में दलित जीवन ।

उपर्युक्त विषय के अध्ययन के पश्चात प्राप्त हुए जिन पर स्वतंत्र रुप से अनुसंधान हो सकता है । यहाँ मेरे शोध विषय की सीमा है । आशा है भविष्य में उपर्युक्त विषय पर शोधार्थी स्वतंत्र रुप से शोधकार्य संपन्न कर सकेंगे ।